सूरतुल मोमीनून-२३

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ

सूरः मोमीनून मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ अट्ठारह आयतें और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. बेशक ईमानवालों ने कामयाबी हासिल कर ली।[1]

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿1﴾

२. जो अपनी नमाज में खुशूअ (विनम्रता) करते हैं।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ﴿2﴾

३. जो बेकार बातों से मुंह मोड़ लेते हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ﴿3﴾

४. जो ज़कात (धर्मदान) अदा करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ﴿4﴾

५. जो अपने गुप्तांगों (शर्मगाहों) की हिफ़ाज़त (रक्षा) करने वाले हैं।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿5﴾

६. सिवाय अपनी बीवियों और मिल्कियत (स्वामित्व) की दासियों (लौंडियों) के, बेशक यह निन्दा किये जाने वालों में से नहीं हैं।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿6﴾

७. इस के सिवाय जो दूसरे ढूंढें वही सीमा उल्लंघन (हद से तजावुज़) कर जाने वाले हैं।[3]

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ﴿7﴾

---

[1] فلاح का शाब्दिक अर्थ (लफ्ज़ी मायने) है चीरना, काटना, किसान को भी فلاح कहा जाता है कि वह धरती को चीर-फाड़कर उस में बीज बोता है। مُفلح (कामयाब) भी वह होता है जो दुखों को काटता हुआ निशाने तक पहुंच जाता है।

[2] لغو हर वह काम और हर वह बात है जिसका कोई फ़ायेदा न हो या उस में दुनियावी या धार्मिक नुक़सान हों। इन से बचने का मतलब है कि उनकी तरफ़ ध्यान भी न दिया जाये न कि उन्हें अपनायें या उनको किया जाये।

[3] इस से मालूम हुआ कि متعہ (मुतआ) की इस्लाम में कभी इजाज़त नहीं है, और कामवासना (जिन्सी ज़रूरत) की पूर्ति के लिए केवल दो ही उचित (मुनासिब) तरीक़ा है। बीवी से सहवास (जिमा) कर के या दासियों से कामवासना की तृप्ति (तकमील) कर के, बल्कि अब केवल बीवी इस काम के लिए रह गयी है क्योंकि लौंडियों का रिवाज अभी ख़त्म है।

८. जो अपनी अमानत और वादे की रक्षा (हिफाजत) करने वाले हैं ।[1]

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿8﴾

९. जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते हैं ।[2]

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿9﴾

१०. यही वारिस (उत्तराधिकारी) हैं ।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿10﴾

११. जो फ़िरदौस (जन्नत का सब से ऊंचा दर्जा) के वारिस होंगे, जहाँ वे हमेशा रहेंगे ।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿11﴾

१२. और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती मिट्टी के सार (खुलासा) से पैदा किया ।[3]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ﴿12﴾

१३. फिर उसे वीर्य (मनी) बनाकर सुरक्षित (महफ़ूज) जगह में रख दिया ।[4]

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿13﴾

१४. फिर वीर्य को हम ने जमा हुआ ख़ून बना दिया, फिर उस ख़ून के लोथड़े को गोश्त का टुकड़ा बना दिया, फिर गोश्त के टुकड़े से हड्डियाँ बनायीं, फिर हड्डियों को गोश्त पहना दिया, फिर एक दूसरी शक्ल में उसे पैदा कर दिया। बाबरकत है वह अल्लाह जो सब से अच्छी पैदाईश करने वाला है ।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۗ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿14﴾

१५. इस के बाद फिर तुम सब जरूर मर जाने वाले हो ।

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿15﴾

---

[1] أمانات से मुराद मुकर्रर डियुटी को पूरा करना, छिपी बातों और माल की हिफ़ाजत है और वचनों के पालन में अल्लाह से किये हुए वादे और इंसानों से किये वादे और सन्धि (मुआहदे) दोनों शामिल हैं ।

[2] आख़िर में फिर नमाजों की हिफ़ाजत को सफलता के लिए जरूरी कहा है, जिस से नमाज की विशेषता (अहमियत) और महत्व (ख़ुसूसियत) वाजेह होती है, लेकिन आज मुसलमान के क़रीब दूसरे नेक कामों की तरह इसकी कोई ख़ास अहमियत (महत्व) नहीं रह गया है ।

[3] मिट्टी से पैदा करने का मतलब पहले आदमी आदम की मिट्टी से पैदाईश है या इंसान जो भोजन भी खाता है वह सब मिट्टी ही से पैदा होता है, इस बिना पर उस वीर्य की असल जो इंसान की उत्पत्ति (पैदाईश) की वजह बनती है, मिट्टी ही है ।

[4] सुरक्षित (महफ़ूज) स्थान से मुराद माँ का गर्भाशय (रिहम) है, जहाँ नौ महीने बच्चा बड़ा महफ़ूज रहता और पलता है ।

१६. फिर क़यामत के दिन बेशक तुम सब उठाये जाओगे।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ (16)

१७. और हम ने तुम्हारे ऊपर सात आकाश बना दिये हैं, और हम सृष्टि (मख़लूक़) से ग़ाफ़िल नहीं हैं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ (17)

१८. और हम एक उचित मात्रा (तादाद) में आकाश से पानी बरसाते हैं, फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं,[1] और हम उस के ले जाने पर यक़ीनन क़ादिर हैं।

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِى الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ (18)

१९. इसी पानी के जरिये हम तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे (फल) होते हैं, उन्ही में से तुम खाते भी हो।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ (19)

२०. और वह पेड़ जो सैना नाम के पहाड़ पर उगता है, जो तेल निकालता है और खाने वाले के लिए सालन है।[2]

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ (20)

२१. तुम्हारे लिए चौपाये जानवरों में भी बहुत बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, उन के पेटों से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और दूसरे भी बहुत से फ़ायदे तुम्हारे लिए उन में हैं, उन में से कुछ को तुम खाते भी हो।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۗ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ (21)

२२. और उन पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ (22)

---

[1] यानी यह प्रबन्ध भी किया कि सारा पानी बरस कर बह न जाये बल्कि हम ने चश्मों (स्रोतों), नहरों, नदियों, तालाबों और कुओं के रूप में उसे महफ़ूज़ भी किया है, (क्योंकि उन सब की असल भी आसमानी बारिश ही है) ताकि उन दिनों में जब बारिश न हो या ऐसे इलाकों में जहाँ वर्षा कम होती हो और पानी की ज़्यादा ज़रूरत हो, उन से पानी ले लिया जाये।

[2] इस से ज़ैतून का पेड़ मुराद है, जिसका रस तेल के रूप में, फल सालन के रूप में इस्तेमाल होता है। (सालन) को صبغ (रंग) कहा है क्योंकि रोटी रस में डूबो कर रंगी जाती है, तूर सीना (पहाड़) और उसका क़रीबी इलाक़ा ख़ास तौर से इसकी अच्छी पैदावार का इलाक़ा है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ (23)

२३. वेशक हम ने नूह को उसकी क़ौम की ओर (रसूल बनाकर) भेजा, उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत करो और उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَن يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً مَّا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ (24)

२४. उस के समाज के काफ़िर सरदारों ने साफ कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही इंसान है, यह तुम पर फ़ज़ीलत (और गल्बा) हासिल करना चाहता है।[1] अगर अल्लाह ही को क़ुबूल होता तो किसी फ़रिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे अपने बुज़ुर्गों के समय में सुना ही नहीं।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ (25)

२५. बेशक इस इंसान को जुनून है तो तुम उसे एक मुक़र्रर वक़्त तक ढील दो।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ (26)

२६. नूह ने दुआ की हे मेरे रब! इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर।[2]

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ فِيهَا مِن كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ (27)

२७. तो हम ने उनकी तरफ़ वह्यी भेजी कि तू हमारी आँखों के सामने हमारी वह्यी के अनुसार एक नाव बना, जब हमारा हुक्म आ जाये और तन्दूर उबल पड़े[3] तो तू हर तरह के एक-एक जोड़े उस में रख ले,[4] और अपने परिवार को भी, सिवाय उन के जिन के बारे में हमारी बात पहले गुज़र चुकी है। ख़बरदार! जिन लोगों ने

---

[1] यानी यह तो तुम्हारे जैसा ही इंसान है, यह किस तरह नबी और रसूल हो सकता है? और अगर यह नबूअत और रिसालत का दावा कर रहा है तो इसका असल मक़सद इस से तुम पर फ़ज़ीलत और उच्चता (बरतरी) हासिल करना है।

[2] साढ़े नौ सौ साल तक तबलीग़ करने और दावत देने के बाद आख़िर में रब से दुआ की।

[3] तन्दूर पर व्याख्या (तफ़सीर) सूर: हूद में गुज़र चुकी है कि मुनासिब बात यह है कि इस से मुराद हमारे समाज का मशहूर तन्दूर नहीं जिस में रोटी पकाई जाती है, बल्कि धरती मुराद है कि सारी धरती ही चश्मों (स्रोतों) में तबदील हो गयी, नीचे धरती से पानी चश्मों की तरह उबल पड़ा, नूह को हुक्म दिया जा रहा है कि जब पानी धरती से उबल पड़े ---

[4] यानी जानदार, नबातात और फल सब में से एक-एक जोड़ा (नर और मादा) नाव में रख ले ताकि सभी का वंश बाक़ी रहे।

ज़ुल्म किया है उनके बारे में मुझ से कोई बात न करना, वे तो सब डुबोये जायेंगे।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنتَ وَمَن مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (28)

२८. जब तू और तेरे साथी नाव में अच्छी तरह बैठ जाना तो कहना कि सभी तारीफ़ें अल्लाह के लिए ही हैं जिस ने हम लोगों को ज़ालिमों से छुटकारा दिलाया।

وَقُل رَّبِّ أَنزِلْنِي مُنزَلًا مُّبَارَكًا وَأَنتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ (29)

२९. और कहना हे मेरे रब! मुझे सुरक्षित (महफ़ूज़) उतारना और तू ही बेहतर तरीक़े से उतारने वाला है।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِن كُنَّا لَمُبْتَلِينَ (30)

३०. बेशक इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं, और हम बेशक इम्तेहान लेने वाले हैं।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ (31)

३१. फिर उन के बाद हम ने दूसरे समुदाय भी पैदा किये।[1]

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ (32)

३२. फिर उन में ख़ुद उन में से ही रसूल भी भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम क्यों नहीं डरते?

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ (33)

३३. और क़ौम के सरदारों ने जवाब दिया जो कुफ़्र करते थे और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाते थे, और हम ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में सुखी रखा था कि यह तो तुम जैसा इंसान है, तुम्हारे खानों में से खाता है और तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है।

وَلَئِنْ أَطَعْتُم بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ (34)

३४. और अगर तुम ने अपने जैसे ही इंसान की इताअत क़ुबूल कर ली तो बेशक तुम नुक़सान (ख़सारे) में हो।

[1] ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के नज़दीक नूह की क़ौम के बाद अल्लाह तआला ने जिस क़ौम को पैदा किया और उन में रसूल भेजा वह 'आद' की क़ौम है, क्योंकि ज़्यादातर जगह पर नूह की क़ौम के वारिस के रूप में 'आद' की क़ौम का ही बयान आया है।

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَنَّكُم مُّخْرَجُونَ (35)

३५. क्या यह तुम्हें इस बात का वादा देता है कि जब तुम मर कर केवल मिट्टी और हड्डी रह जाओगे, तो तुम फिर ज़िन्दा किये जाओगे?

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ (36)

३६. नहीं नहीं, दूर और बहुत दूर है वह जिस का तुम वादा दिये जाते हो।

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ (37)

३७. ज़िन्दगी तो केवल दुनियावी ज़िन्दगी है जिस में हम मरते-जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर उठाये जायेंगे।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ (38)

३८. यह तो बस वह इंसान है जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है, हम तो इस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ (39)

३९. नबी ने दुआ की कि रब इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर।

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ (40)

४०. जवाब मिला कि यह बहुत ही जल्द अपने किये पर पछताने लगेंगे।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ غُثَاءً فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (41)

४१. आख़िर में इंसाफ़ के मुताबिक़ (नियमानुसार) चीख[1] ने उन्हें पकड़ लिया और हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला[2] तो ज़ालिमों के लिए दूरी हो।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ (42)

४२. फिर उन के बाद हम ने दूसरी भी क़ौम पैदा किये।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ (43)

४३. न तो कोई क़ौम अपने वक़्त से आगे बढ़ी और न पीछे रही।

[1] यह «चीख» कहते हैं कि हज़रत जिब्रील की थी, कुछ आलिम कहते हैं कि वैसे ही कड़ी चीख थी जिस के साथ तेज़ आंधियां थीं, दोनों ने मिलकर उन को पल भर में तबाही के घाट उतार दिया।

[2] غُثَاءً उस कूड़े करकट को कहते हैं जो बाढ़ के पानी के साथ होता है।

४४. फिर हम ने लगातार रसूल भेजे, जिस उम्मत के पास जब-जब उसका रसूल आया उस ने झुठलाया, तो हम ने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया, और उन्हें कहानी बना दिया, उन लोगों के लिए दूरी हो जो ईमान क़ुबूल नहीं करते।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ ۚ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُم بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿44﴾

४५. फिर हम ने मूसा को और उस के भाई हारून को अपनी निशानियाँ और वाज़ेह दलील के साथ भेजा।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿45﴾

४६. फ़िरऔन और उस की सेना की तरफ़, लेकिन उन्होंने तकब्बुर किया और थे ही वे घमन्ड करने वाले लोग।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿46﴾

४७. कहने लगे, क्या हम अपने जैसे दो इंसानों पर ईमान लायें? जबकि ख़ुद उनकी क़ौम हमारे ग़ुलाम है।

فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عَابِدُونَ ﴿47﴾

४८ तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, आख़िर में वे लोग भी हलाक शुदा लोगों में शामिल हो गये।

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ﴿48﴾

४९. और हम ने तो मूसा को किताब भी दी कि लोग सच्चे रास्ते पर आ जायें।[1]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿49﴾

५०. और हम ने मरियम के बेटे और उसकी माता को एक निशानी बनाया,[2] और उन दोनों को ऊँचे, क़रार वाले और बहते पानी वाली जगह में पनाह दी।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ﴿50﴾

---

[1] इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा को तौरात फ़िरऔन और उस के मानने वालों को डुबाने के बाद अता की गयी और तौरात के उतरने के बाद अल्लाह तआला ने किसी क़ौम को सामूहिक रूप (मजमूई तौर) से अज़ाब के ज़रिये नाश नहीं किया बल्कि मुसलमानों को यह हुक्म दिया जाता रहा कि वह काफ़िरों से जिहाद (धर्मयुद्ध) करें।

[2] क्योंकि हज़रत ईसा का जन्म बिना पिता के हुआ जो रब की ताक़त का मज़हर (प्रतीक) है, जिस तरह आदम को बिना माता-पिता और हव्वा को बिना माता के हज़रत आदम से और दूसरे सभी इंसानों को माता-पिता के मिलन से पैदा करना उसकी निशानियों में से है।

५१. हे पैग़म्बरो! हलाल चीज़ें खाओ और नेकी के काम करो। तुम जो कुछ कर रहे हो उस को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُوا۟ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَٱعْمَلُوا۟ صَٰلِحًا ۖ إِنِّى بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ (51)

५२. और बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है[1] और मैं ही तुम सब का रब हूँ, तो तुम मुझ से डरते रहो।

وَإِنَّ هَٰذِهِۦٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَٰحِدَةً وَأَنَا۠ رَبُّكُمْ فَٱتَّقُونِ (52)

५३. फिर उन्होंने ख़ुद (ही) अपनी बात (धर्म) के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए, हर सम्प्रदाय (फ़िर्क़ा) उस के पास जो कुछ है उसी पर घमंड कर रहा है।

فَتَقَطَّعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ (53)

५४. तो आप भी उन्हें उनकी ग़फ़लत की हालत में कुछ वक़्त पड़ा रहने दें।

فَذَرْهُمْ فِى غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ (54)

५५. क्या ये (इस तरह) समझ बैठे हैं कि हम जो कुछ भी उनका माल और औलाद बढ़ा रहे हैं।

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُمِدُّهُم بِهِۦ مِن مَّالٍ وَبَنِينَ (55)

५६. वे उनके लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं? नहीं, नहीं बल्कि ये समझते ही नहीं।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۚ بَل لَّا يَشْعُرُونَ (56)

५७. बेशक जो लोग अपने रब के डर से डरते हैं।

إِنَّ ٱلَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ (57)

५८. और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَٱلَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ (58)

५९. और जो अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं बनाते।

وَٱلَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ (59)

---

[1] أمة से मुराद दीन है, और एक होने का मतलब यह है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की इबादत की दावत दी है, लेकिन लोग तौहीद को छोड़कर अलग-अलग गुटों और सम्प्रदायों (फ़िर्क़ों) में बट गये हैं, और हर गुट अपने ईमान और अमल पर ख़ुश है चाहे वह सच से कितना ही दूर हो।

وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿60﴾

६०. और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उन के दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿61﴾

६१. यही हैं जो जल्दी-जल्दी नेकी हासिल कर रहे हैं, और यही हैं जो उनकी तरफ़ दौड़ जाने वाले हैं।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿62﴾

६२. हम किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा भार नहीं देते, हमारे पास एक किताब है जो सच ही बोलती है, उन के ऊपर तनिक भी ज़ुल्म न होगा।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿63﴾

६३. बल्कि उन के दिल उस तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं और उन के लिए इस के सिवाय भी बहुत से कर्म हैं जिन्हें वे करने वाले हैं।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ﴿64﴾

६४. यहां तक कि जब हम ने उन के ख़ुशहाल लोगों को अज़ाब में जकड़ लिया तो वे बिलबिलाने लगे।

لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿65﴾

६५. आज मत बिलबिलाओ, बेशक तुम हमारे सामने मदद न किये जाओगे।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿66﴾

६६. मेरी आयतें तो तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं, फिर भी तुम अपनी एड़ियों के बल उल्टे भागते थे।

مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿67﴾

६७. अकड़ते ऐंठते, कहानी बनाते उसे छोड़ देते थे।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾

६८. क्या उन्होंने इस बात पर ग़ौर और फ़िक्र नहीं किया? बल्कि इन के पास वह आया जो इन के पहलों के पास नहीं आया था?

اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿69﴾

६९. या इन्होंने अपने पैग़म्बर को पहचाना नहीं कि उस के इंकार करने वाले हो रहे हैं।

७०. या यह कहते हैं कि इसका माथा फिर गया है? बल्कि वह तो उन के पास सच लेकर आया है। हाँ, इन में से ज़्यादातर सच से चिढ़ने वाले हैं।

اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلۡ جَآءَهُمۡ بِالۡحَـقِّ وَاَكۡثَرُهُمۡ لِلۡحَـقِّ كٰرِهُوۡنَ ﴿70﴾

७१. अगर हक़ ही उनकी इच्छाओं का अनुयायी (पैरोकार) हो जाये, तो धरती और आकाश और उन के बीच जितनी चीज़ें हैं सब तहस-नहस हो जायें।[1] सच तो यह है कि हम ने उन्हें उन की नसीहत पहुँचा दी है, लेकिन वे अपनी शिक्षा (नसीहत) से मुँह मोड़ने वाले हैं।

وَلَوِ اتَّبَعَ الۡحَـقُّ اَهۡوَآءَهُمۡ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالۡاَرۡضُ وَمَنۡ فِيۡهِنَّ ؕ بَلۡ اَتَيۡنٰهُمۡ بِذِكۡرِهِمۡ فَهُمۡ عَنۡ ذِكۡرِهِمۡ مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿71﴾

७२. क्या आप उन से कोई उजरत (पारिश्रमिक) चाहते हैं? याद रखिये, आप के रब की उजरत बहुत बेहतर है, और वह सब से अच्छी रोज़ी पहुँचाने वाला है।

اَمۡ تَسۡـَٔـلُهُمۡ خَرۡجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيۡرٌ ۖ وَّهُوَ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ﴿72﴾

७३. बेशक आप तो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं।

وَاِنَّكَ لَتَدۡعُوۡهُمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿73﴾

७४. और बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वे सीधे रास्ते से मुड़ जाने वाले हैं।

وَاِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوۡنَ ﴿74﴾

७५. और अगर हम उन पर रहमत (कृपा) करें और उनकी कठिनाई दूर कर दें तो यह तो अपनी-अपनी सरकशी पर ज़्यादा मज़बूत रहकर ज़्यादा भटकने लगेंगे।

وَلَوۡ رَحِمۡنٰهُمۡ وَكَشَفۡنَا مَا بِهِمۡ مِّنۡ ضُرٍّ لَّـلَجُّوۡا فِىۡ طُغۡيَانِهِمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ﴿75﴾

७६. और हम ने उन्हें अज़ाब में भी जकड़ा, फिर भी ये लोग न तो अपने रब के सामने झुके और न विनती (आजिज़ी) का रास्ता अपनाया।[2]

وَلَقَدۡ اَخَذۡنٰهُمۡ بِالۡعَذَابِ فَمَا اسۡتَكَانُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَمَا يَتَضَرَّعُوۡنَ ﴿76﴾

---

[1] हक़ से मुराद दीन और दीनी क़ानून हैं, यानी अगर दीन उनकी इच्छानुसार नाज़िल हो तो वाज़ेह बात है कि धरती और आकाश का सारा प्रबन्ध (निज़ाम) ही छिन्न-भिन्न हो जाये, जैसे वह चाहते हैं कि एक देवता के बजाय बहुत से देवता हों, अगर ऐसा हक़ीक़त में हो तो क्या मख़लूक़ की तदबीर ठीक रह सकती है? और इसी तरह की दूसरी उनकी तमन्नायें हैं।

[2] अज़ाब से मुराद यहाँ वह हार है जो बद्र की लड़ाई में मक्का के काफ़िरों की हुई, जिस में उन

حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿77﴾

७७. यहाँ तक कि जब हम ने उन पर कड़े अज़ाब के दरवाज़े खोल दिया तो उसी वक़्त तुरन्त मायूस हो गये।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿78﴾

७८. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारे लिए कान, आँखें और दिल बनाया, लेकिन तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿79﴾

७९. और वही है जिस ने तुम्हें (पैदा कर के) धरती पर फैला दिया और उसी की तरफ़ तुम जमा किये जाओगे।[1]

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿80﴾

८०. और यह वही है जो जिलाता और मारता है और रात-दिन के फेरबदल करने का मालिक भी वही है, क्या तुम को समझ बूझ नहीं?

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿81﴾

८१. बल्कि उन लोगों ने भी वही बात कही जो पहले के लोग कहते चले आये हैं।

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿82﴾

८२. कहा कि जब हम मर कर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, क्या फिर भी हम ज़रूर खड़े किये जायेंगे?

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَاۗؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿83﴾

८३. हम से और हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं, यह तो केवल अगले लोगों के ढकोसले हैं।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿84﴾

८४. पूछिये तो कि धरती और उस की कुल चीज़ें किस की हैं? बताओ अगर जानते हो।

के सत्तर आदमी मारे गये थे या वह सूखे का अज़ाब है जो नबी ﷺ के शाप (बद्दुआ) के नतीजे में आया था।

[1] इस में अल्लाह की बड़ाई का बयान है कि जिस तरह तुम्हें पैदा करके कई इलाक़ों में फैला दिया है, तुम्हारे रंग भी एक-दूसरे से अलग हैं, ज़बानें (भाषायें) भी अलग और मुआमला और संस्कृति (तहज़ीब) भी अलग। फिर एक वक़्त आयेगा कि तुम सब को ज़िंदा करके वह अपने दरबार में जमा करेगा।

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿85﴾

८५. वे तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए तो फिर तुम नसीहत हासिल क्यों नहीं करते।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿86﴾

८६. पूछिये, सातों आकाशों का और बहुत सम्मानित (इज़्ज़त वाले) अर्श का रब कौन है?

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿87﴾

८७. वे लोग जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते?[1]

قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿88﴾

८८. पूछिये कि सभी चीज़ों का अधिकार (हक़) किस के हाथ में है जो पनाह देता है, और जिस की तुलना में कोई पनाह नहीं दिया जाता, अगर तुम जानते हो तो बता दो?

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ ۚ قُلْ فَأَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿89﴾

८९. यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम पर किधर से जादू हो जाता है?

بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿90﴾

९०. सच यह है कि हम ने उन्हें सच पहुँचा दिया है, और ये बेशक झूठे हैं।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ إِلٰهٍ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿91﴾

९१. न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ दूसरा कोई माबूद है, वरना हर देवता अपनी मख़लूक़ को लिए-लिए फिरता और हर एक-दूसरे पर ऊँचा होने की कोशिश करता, जो गुण यह बताते हैं अल्लाह उन से पाक है।

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿92﴾

९२. वह छिपी-ज़ाहिर का जानने वाला है और जो शिर्क यह करते हैं उस से बहुत ऊँचा है।

قُلْ رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿93﴾

९३. (आप) दुआ (प्रार्थना) करें कि हे मेरे रब! अगर तू मुझे वह दिखाये जिस का वादा इन्हें दिया जा रहा है।

[1] यानी जब तुम्हें क़ुबूल है कि धरती का और उस में मौजूद हर चीज का पैदा करने वाला सिर्फ एक अल्लाह ही है। आकाश और महान (अज़ीम) अर्श का मालिक भी वही है तो भी तुम्हें यह क़ुबूल करने में क्यों शक है कि इबादत के लायक़ भी वही एक अल्लाह है, फिर तुम उस के एक होने को क़ुबूल करके उस के अज़ाब से बचने की कोशिश क्यों नहीं करते?

رَبِّ فَلَا تَجۡعَلۡنِي فِي ٱلۡقَوۡمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿94﴾

९४. तो हे मेरे रब ! तू मुझे इन जालिमों के गुट में न करना ।

وَإِنَّا عَلَىٰٓ أَن نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمۡ لَقَٰدِرُونَ ﴿95﴾

९५. और हम जो कुछ वादे उन्हें दे रहे हैं सब आप को दिखा देने की क़ुदरत रखते हैं ।

ٱدۡفَعۡ بِٱلَّتِي هِيَ أَحۡسَنُ ٱلسَّيِّئَةَۚ نَحۡنُ أَعۡلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿96﴾

९६. बुराई को इस तरह से दूर करें जो पूरी तरह भलाई वाला हो, जो कुछ ये बयान करते हैं, उसे हम अच्छी तरह जानते हैं ।

وَقُل رَّبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنۡ هَمَزَٰتِ ٱلشَّيَٰطِينِ ﴿97﴾

९७. और दुआ करें कि हे मेरे रब ! मैं शैतानों की शंकाओं (वसवसों) से तेरी पनाह चाहता हूं ।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَن يَحۡضُرُونِ ﴿98﴾

९८. और हे मेरे रब ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि वे मेरे पास आ जायें ।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ ٱلۡمَوۡتُ قَالَ رَبِّ ٱرۡجِعُونِ ﴿99﴾

९९. यहां तक कि जब उन में से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे ।

لَعَلِّيٓ أَعۡمَلُ صَٰلِحٗا فِيمَا تَرَكۡتُۚ كَلَّآۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَاۖ وَمِن وَرَآئِهِم بَرۡزَخٌ إِلَىٰ يَوۡمِ يُبۡعَثُونَ ﴿100﴾

१००. कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेकी का काम करूँ,[1] कभी ऐसा नहीं होने का, यह केवल एक क़ौल है जिस का यह कहने वाला है । उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के दोबारा जिन्दा होने वाले दिन तक ।[2]

---

[1] यह तमन्ना (कामना) हर काफ़िर मौत के वक़्त फिर उठाये जाने के वक़्त, अल्लाह के दरबार में खड़े होते वक़्त और नरक में ढकेले जाने के वक़्त करता है और करेगा, लेकिन इसका कोई फ़ायेदा नहीं होगा, क़ुरआन करीम में इस विषय को कई जगहों पर बयान किया गया है ।

[2] दो चीज़ों के बीच पर्दा और आड़ को برزخ कहा जाता है । दुनिया की जिन्दगी और आख़िरत की ज़िन्दगी के बीच की जो मुद्दत है, उसे यहां برزخ कहा गया है । क्योंकि मरने के बाद इंसान का नाता दुनिया से ख़त्म हो जाता है और आख़िरत की ज़िन्दगी की शुरूआत उस वक़्त होगी जब सभी लोगों को दोबारा जिन्दा किया जायेगा, यह बीच की ज़िन्दगी जो क़ब्र में या पक्षी के पेट में या जला देने की हालत में मिट्टी के कणों में गुज़रती है, बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी है । इंसान का यह वजूद जहां भी और जिस रूप में भी होगा स्पष्टरूप (वाज़ेह तौर) से वह मिट्टी बन चुका होगा, या राख बनाकर हवाओं में उड़ा दिया गया या नदियों में बहा दिया गया होगा या किसी जानवर का भोजन बन गया होगा, लेकिन अल्लाह तआला सभी को एक नया रूप अता कर हश्र के मैदान में जमा करेगा ।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿101﴾

१०१. तो जब नरसिंघा में फूँक मार दी जायेगी, उस दिन न तो आपस के सम्बन्ध ही रहेंगे, न आपस की पूछताछ।

فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿102﴾

१०२. तो जिनकी तराज़ू का पलड़ा भारी हो गया वे तो कामयाबी हासिल करने वाले हो गये।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿103﴾

१०३. और जिनकी तराज़ू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपना नुक़सान ख़ुद कर लिया, जो हमेशा के लिए नरक में चले गये।

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿104﴾

१०४. उन के मुँह को आग झुलसाती रहेगी, वे वहाँ बद बने हुए होंगे।[1]

أَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿105﴾

१०५. क्या मेरी आयतों का पाठ तुम्हारे सामने नहीं होता था? फिर भी तुम उन को झुठलाते थे।

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ﴿106﴾

१०६. वे कहेंगे कि हे मेरे रब! हमारी बदनसीबी हम पर प्रभावशाली (ग़ालिब) हो गयी, हक़ीक़त में हम भटके हुए थे।

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿107﴾

१०७. हे मेरे रब! हम को यहाँ से निकाल दे, अगर अब हम ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं।

قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴿108﴾

१०८. (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा फटकार है तुम पर यही पड़े रहो और मुझ से बात न करो।

إِنَّهُ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿109﴾

१०९. मेरे बन्दों का एक गुट था जो लगातार यही कहता रहा कि हे मेरे रब! हम ईमान ला चुके हैं, तू हमें माफ़ कर दे और हम पर रहम कर तू सभी रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

[1] كَلَح का मतलब है होंठ सिकुड़ कर दाँत निकल आयें, होंठ दाँतों के वस्त्र (लिबास) के रूप में हैं, जब यह नरक की आग से सिकुड़ और सिमट जायेंगे तो दाँत दिखायी देने लगेंगे, जिस से इंसान का रूप बदसूरत और डरावना हो जायेगा।

११०. (लेकिन) तुम उनका मज़ाक ही उड़ाते रहे यहाँ तक कि (उन के पीछे) तुम मेरी याद भुला बैठे और तुम उन की हँसी ही उड़ाते रहे।

فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سِخْرِيًّا حَتَّىٰ أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِي وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ (110)

१११. मैंने आज उन के सब्र (और तक़्वा) का बदला दे दिया है, कि वे अपनी मुराद को पहुँच चुके हैं।

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ (111)

११२. (अल्लाह तआला) पूछेगा कि तुम धरती पर वर्षों की गिनती से कितने दिन रहे?

قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ (112)

११३. (वे) कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से भी पूछ लीजिए।[1]

قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ (113)

११४. (अल्लाह तआला) फ़रमायेगा हक़ीक़त यह है कि तुम वहाँ बहुत कम रहे हो, काश! इस को तुम पहले ही से जान लेते।

قَالَ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (114)

११५. क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ (115)

११६. अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह बुलन्द है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं, वही बाइज़्ज़त अर्श का रब है।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ (116)

११७. और जो इंसान अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को पुकारे जिस का उस के पास कोई सुबूत नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के ऊपर ही है। बेशक काफ़िर लोग कामयाबी से महरूम (वंचित) हैं।[2]

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ (117)

---

[1] इस से मुराद फ़रिश्ते हैं, जो इंसान के अमल और उम्र लिखने पर तैनात हैं, या वह इंसान मुराद है जो हिसाब-किताब में महारत रखते हैं। क़यामत की भयानकता उन के दिमाग से दुनिया की सुख-सुविधा को मिटा देगी और दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें ऐसी लगेगी जैसे दिन या आधा दिन, इसलिए वह कहेंगे कि हम तो एक दिन या उस से भी कम वक़्त दुनिया में रहे। बेशक तू फ़रिश्तों से या गिनती करने वालों से पूछ ले।

[2] इस से मालूम हुआ कि भलाई और कामयाबी आख़िरत में अल्लाह के अज़ाब से बच जाना है, सिर्फ़ दुनिया के माल और आराम की ज़्यादती कामयाबी नहीं, यह तो दुनिया में काफ़िरों को भी मिली है, लेकिन अल्लाह तआला उन से भलाई को नकार रहा है, जिसका साफ़ मतलब है

११८. और कहो कि हे मेरे रब ! तू माफ़ कर और रहम (कृपा) कर और तू सभी रहम करने वालों से अच्छा रहम करने वाला है।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِمِينَ (118)

सूरतुन नूर-२४

سُورَةُ النُّورِ

सूर: नूर* मदीने में उतरी और इसकी चौसठ आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. यह है वह सूर: जो हम ने उतारी है[1] और मुकर्रर कर दी है और जिस में हम ने खुले हुक्म उतारे हैं ताकि तुम याद रखो।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ (1)

२. ज़िना करने वाली औरत-मर्द में से हर एक को सौ कोड़े लगाओ।[2] उन पर अल्लाह के नियमों के मुताबिक सज़ा देते हुए तुम्हें कभी तरस नहीं खानी चाहिए अगर तुम्हें अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान हो। उन की

الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ (2)

कि असल तौर से भलाई आख़िरत की भलाई है, जो ईमानवालों के हिस्से में आयेगी न दुनियावी धन और साधन (वसायल) का ज़्यादा होना, जो कि बिना भेद के ईमानवालों और काफ़िर सब को ही मिलती है।

* सूर: नूर, सूर: अहज़ाब और सूर: निसा यह तीनों सूर: ऐसी है जिन में औरतों की ख़ास परेशानियाँ समाजिक जीवन के बारे में अहम तफ़सीली जानकारियों का बयान है।

[1] क़ुरआन करीम की सभी सूरतें अल्लाह की उतारी हुई हैं, लेकिन इस सूर: के बारे में जो यह कहा तो इस से इस सूर: में बयान किये गये हुक्मों की अहमियत को उजागर करना है।

[2] व्याभिचार (ज़िना) की शुरूआती सज़ा जो इस्लाम में वक़्ती तौर से बतायी गयी थी, वह सूर: निसा की आयत नं॰ १५ में गुज़र चुकी है, उस में कहा गया था कि जब तक इस के लिए कोई स्थाई दण्ड निर्धारित (मुस्तक़िल सज़ा मुक़र्रर) न कर लिया जाये, उन बदकार औरतों को घरों में बन्द रखो। फिर जब सूर: नूर की यह आयत उतरी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह ने जो वादा किया था, उस के ऐतबार से बदकार मर्द-औरत का स्थाई दण्ड निर्धारित कर दिया गया है वह तुम मुझ से सीख लो, और वह है कि अविवाहित मर्द-औरत के लिए हर एक को सौ-सौ कोड़े और विवाहित (शादी शुदा) मर्द-औरत को सौ-सौ कोड़े और पत्थरों से मार कर मार डालना। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हुदूद)

सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक गुट मौजूद होना चाहिए।

३. व्याभिचारी (ज़िना) मर्द सिवाय बदकार औरत या मूर्तिपूजक औरत के दूसरे से विवाह नहीं करता और व्याभिचारिणी औरत भी सिवाय व्याभिचारी मर्द या मूर्तिपूजक मर्द के सिवाय दूसरे से विवाह नहीं करती। और ईमानवालों को यह हराम (निषेध) कर दिया गया।[1]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ③

४. और जो लोग पवित्र स्त्री पर ज़िना का इल्ज़ाम लगायें, फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही क़ुबूल न करो, ये दुराचारी लोग हैं।[2]

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ④

५. हाँ, जो लोग इस के बाद माफ़ी माँग कर सुधार कर लें तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

६. और जो लोग अपनी बीवियों पर व्याभिचार (बदकारी) का इल्ज़ाम लगायें और उन का गवाह सिवाय उन के दूसरे कोई न हो तो ऐसे लोगों में से हर एक का सबूत यह है कि चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि वह सच्चों में से है।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍ ۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥

---

[1] इस के मतलब में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। कुछ कहते हैं कि यहाँ विवाह से मुराद मशहूर विवाह नहीं है बल्कि ज़िना के अर्थ (मायेना) में है और मक़सद व्याभिचार (ज़िना) के बुरे नतीजे और बुरा काम को बयान करना है।

[2] इस में قذف (इल्ज़ाम लगाने) की सज़ा बयान की गई है कि जो इंसान किसी पाक दामन औरत या मर्द पर व्याभिचार (ज़िना) का इल्ज़ाम लगाये (उसी तरह जो औरत किसी पवित्र पुरूष या औरत पर व्याभिचार का इल्ज़ाम लगाये) और सबूत में चार गवाह पेश न कर सके, तो उन के लिए तीन हुक्म बयान किये गये हैं (१) उन्हे अस्सी कोड़े लगाये जायें, (२) उनकी गवाही कभी क़ुबूल न की जायें और (३) वह अल्लाह के सामने और लोगों के सामने दुराचारी (फ़ासिक़) हैं।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦

७. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठों में से हो ।[1]

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑧

८. और उस (औरत) से सजा इस तरह ख़त्म की जा सकती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि बेशक उसका पति झूठ बोलने वालों में से है ।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑨

९. और पाँचवी बार कहे कि उस पर अल्लाह का गज़ब (क्रोध) हो अगर उस का पति सच्चों में से हो ।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ⑩

१०. और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत (दया) तुम पर न होती (तो तुम पर दुख उतरते) और अल्लाह (तआला) माफ़ी को क़ुबूल करने वाला हिक्मत वाला है ।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِیٍٔ مِّنْهُمْ

११. जो लोग यह बहुत बड़ा बुहतान (आक्षेप) खड़ा कर लाये हैं[2] यह भी तुम में से एक गुट है[3] तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है । हाँ, उन में से हर एक पर उतना गुनाह है जितना उस ने

---

[1] इस में لعان (लिआन) के मसअले का बयान है जिस का मतलब यह है कि किसी पति ने अपनी पत्नी को अपनी आँखों से किसी दूसरे के साथ बुरा काम करते हुए देखा, जिसका वह तो गवाह है, लेकिन चूँकि ज़िना के क़ानून को साबित करने के लिए चार गवाहों की ज़रूरत है, इसलिए जब तक वह अपने साथ दूसरे तीन गवाह न पेश करे, उसकी पत्नी पर ज़िना का क़ानून लागू नहीं हो सकता, लेकिन अपनी आँखों से देख लेने के बाद ऐसी गलत पत्नी को सहन करना भी नामुमकिन है । दीनी क़ानून ने इसका यह हल पेश किया है कि यह इंसान अदालत में या अदालत के हाकिम के सामने चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कहेगा कि वह अपनी पत्नी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है या यह बच्चा या गर्भ (हमल) उसका नहीं है, और पाँचवी बार कहेगा कि अगर वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की लानत।

[2] إفك से मुराद वह इल्ज़ाम का वाक़ेआ है जिस में मुनाफ़िक़ों ने हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) की इज़्ज़त और एहतेराम को कलंकित (दाग़दार) करना चाहा था, लेकिन अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) के ऊपर लगे इल्ज़ाम का खण्डन (तरदीद) करने के लिए आयत उतार के उन के पाक सतीत्व (इस्मत) और इज़्ज़त को और बहुत साफ़ कर दिया ।

[3] एक गुट या समूह को عصبة कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे की ताक़त और मदद की वजह से होते हैं ।

مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑪

कमाया है, और उन में से जिस ने उस के बहुत बड़े हिस्से को अंजाम दिया है, उस के लिए सज़ा भी बहुत बड़ी है ।[1]

لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ⑫

१२. उसे सुनते ही मुसलमान मर्दों और औरतों ने अपने हक़ में अच्छा ख़्याल क्यों नहीं किया और क्यों न कह दिया यह तो खुला इल्ज़ाम (आरोप) है ।[2]

لَّوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ⑬

१३. वह इस पर चार गवाह क्यो नही लाये? और जब गवाह नहीं लाये तो यह बुहतान लगाने वाले लोग बेशक अल्लाह के क़रीब केवल झूठे हैं ।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑭

१४. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत दुनिया और आख़िरत में न होता तो बेशक तुम ने जिस बात के चर्चे शुरू कर रखे थे उस बारे में तुम्हें बहुत बड़ा अज़ाब पहुँचता ।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللَّهِ عَظِيمٌ ⑮

१५. जबकि तुम अपने मुँह से इस की चर्चा लगातार करने लगे और अपने मुँह से वह बात निकालने लगे जिस की तुम को कभी ख़बर नहीं थी, अगरचे तुम उसे आसान बात समझते रहे, लेकिन अल्लाह के क़रीब वह बहुत बड़ी बात थी ।

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ لَنَا أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبْحَانَكَ هَٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ⑯

१६. और तुम ने बात सुनते ही क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुँह से निकालनी भी अच्छी नहीं? हे अल्लाह! तू पाक है, यह तो बहुत बड़ा बुहतान है ।

[1] इस से मुराद अब्दुल्लाह बिन उबैय मुनाफ़िक़ों का सरदार है जो इस साज़िश (षड़यन्त्र) का मुखिया था ।

[2] यहाँ से प्रशिक्षण (तरबियत) का वह पहलू ज़ाहिर हो रहा है जो इस वाक़ेआ में छुपा है । इन में सब से पहली बात यह है कि ईमानवाले एक जान की तरह हैं, जब हज़रत आयेशा पर इल्ज़ाम लगाया गया तो तुम ने अपने ऊपर समझकर इसका खण्डन (तरदीद) क्यों नहीं किया और उसे खुला बुहतान (आक्षेप) क्यों नहीं कह दिया?

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿17﴾

१७. अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, अगर तुम सच्चे ईमानवाले हो।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿18﴾

१८. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सामने अपनी आयतें बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿19﴾

१९. जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने की आरज़ू रखते है, उन के लिए दुनियां और आख़िरत में दुखदायी अज़ाब है,[1] और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है और तुम कुछ नहीं जानते।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿20﴾

२०. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत न होती, और यह भी कि अल्लाह (तआला) बहुत प्रेम करने वाला रहम करने वाला है (तो तुम पर अज़ाब आ जाता)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿21﴾

२१. हे ईमानवालो! शैतान के पदचिन्हों (निशाने क़दम) पर न चलो, जो इंसान शैतान के पदचिन्हों पर चले, तो वह बेहयाई और बुरे कामों का ही हुक्म देगा, और अगर अल्लाह (तआला) का फ़ज़्ल और रहमत तुम पर न होती तो तुम में से कोई भी कभी पाक और साफ़ न होता। लेकिन अल्लाह (तआला) जिसे पाक करना चाहे कर देता है, और अल्लाह (तआला) सब सुनने वाला और सब जानने वाला है।

---

[1] فاحشة का मतलब है निर्लज्जा (बेहयाई) और क़ुरआन ने ज़िना को बेहयाई कहा है (बनी इस्राईल) और यहाँ ज़िना के एक झूठी ख़बर के प्रचार को भी अल्लाह तआला ने बेहयाई कहा है और इसे दुनिया और आख़िरत के दुखदायी अज़ाबों का कारण (सबब) बताया है, जिस से असभ्यता (बेहयाई) के बारे में इस्लाम की प्रकृति (मिज़ाज) और अल्लाह तआला की मर्ज़ी का अंदाज़ा होता है कि सिर्फ़ असभ्यता (बेहयाई) की झूठी ख़बर का फैलाना अल्लाह के सामने कितना बड़ा गुनाह है, तो जो लोग रात-दिन एक इस्लामी समाज में अख़बारों, रेडियो, टी॰ वी॰ और फ़िल्मी ड्रामों के ज़रिये बेहयाई का प्रचार कर रहे हैं और घर-घर उसे पहुँचा रहे हैं अल्लाह के यहाँ ये लोग कितने बड़े गुनहगार होंगे?

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (22)

२२. और तुम में से जो भी बड़े और कुशादगी वाले हैं, उन्हें अपने क़रीबी रिश्तेदारों और ग़रीबों और मुहाजिरों को अल्लाह के रास्ते में देने से क़सम न खा लेनी चाहिए, बल्कि माफ़ कर देना चाहिए और जाने देना चाहिए, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह (तआला) तुम्हारी ग़ल्तियों को माफ़ कर दे? अल्लाह (तआला) ग़ल्तियों को माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (23)

२३. जो लोग पाक दामन भोली-भाली ईमान-वाली औरतों पर इल्ज़ाम लगाते हैं वे दुनिया और आख़िरत में धिक्कारे जाने वाले लोग हैं और उन के लिए वहुत सख़्त अज़ाब है।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (24)

२४. जब कि उनके सामने उन की ज़बान और उनके हाथ-पैर उन के अमलों की गवाही देंगे।

يَوْمَئِذٍ يُوَفِّيهِمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ (25)

२५. उस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पूरा-पूरा बदला हक़ और इंसाफ़ के साथ अता करेगा और वे जान लेंगे कि अल्लाह (तआला) ही सच है, वही ज़ाहिर करने वाला है।

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۖ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (26)

२६. ख़बीस औरतें ख़बीस मर्दों के लायक़ हैं और ख़बीस मर्द ख़बीस औरतों के लायक़ हैं और पाक औरतें पाक मर्दों के लायक़ हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लायक़ हैं। ऐसे पाक लोगों के वारे में जो कुछ बकवास ये (आक्षेप धरने वाले) कर रहे हैं वह उन से निर्दोष हैं, उन के लिए बख़्शिश है और इज़्ज़त वाला रिज़्क़ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّىٰ تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ (27)

२७. हे ईमानवालो! अपने घरों के सिवाय दूसरे घरों में न जाओ जव तक कि इजाज़त न ले लो, और वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो[1] यही तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

---

[1] पहले की आयतों में व्याभिचार (ज़िना) और उस की सज़ा का बयान हुआ, अब अल्लाह तआला घर में दाख़िल होने के क़ानूनों का बयान कर रहा है ताकि मर्द-औरत मिश्रण (इख़्तेलात) न हो जो हमेशा व्याभिचार (वेहयाई) और इल्ज़ाम का सबब बनता है।

फَإِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿28﴾

२८. अगर वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर इजाज़त मिले बिना अन्दर न जाओ, और अगर तुम से लौट जाने को कहा जाये तो तुम लौट ही जाओ, यही तुम्हारे लिए सुथराई है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿29﴾

२९. हाँ, जिन में लोग न रहते हों ऐसे घरों में जहाँ तुम्हारा कोई फ़ायेदा या सामान हो, जाने में कोई गुनाह नहीं,[1] तुम जो कुछ भी ज़ाहिर करते हो और जो छुपाते हो अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है।[2]

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۗ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿30﴾

३०. मुसलमान मर्दों से कहो कि अपनी निगाह नीची रखें, और अपनी शर्मगाह (गुप्तांग) की हिफ़ाज़त करें, यही उन के लिए पाकीज़गी है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (तआला) सब जानता है।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ

३१. और मुसलमान औरतों से कहो कि वे भी अपनी निगाह नीची रखें और अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफ़ाज़त करें, और अपनी ज़ीनत का इज़हार न करें[3] सिवाय उस के जो ज़ाहिर

---

[1] इस से मुराद कौन से घर हैं, जिन में बिना इजाज़त लिये दाख़िल होने की इजाज़त दी जा रही है। कुछ आलिम कहते हैं कि इस से मुराद वे घर हैं जो ख़ास तौर से मेहमानों के लिए अलग तैयार किये गये हों, उन में घर के मालिक से पहली बार इजाज़त लेना ही काफ़ी है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद सराय (धर्मशाला) है, जो यात्रियों (मुसाफ़िरों) के लिए होता है या व्यापारिक घर हैं مَتَاعٌ का मतलब है फ़ायदेमंद, यानी जिन में तुम्हारा फ़ायेदा हो।

[2] इस में उन लोगों के लिए चेतावनी (तंबीह) है जो दूसरे लोगों के घरों में दाख़िल होते वक़्त बयान किये गये क़ानूनों की पैरवी करने पर ध्यान नहीं देते।

[3] ज़ीनत (शोभा) से मुराद कपड़ा और ज़ेवर है जो औरतें अपनी ख़ूबसूरती और सुन्दरता में निखार लाने के लिए पहनती हैं, जिसको अपने पति के लिए करने पर ज़ोर दिया गया है, जब कपड़ा और ज़ेवर का इज़हार दूसरे मर्दों के सामने औरतों के लिए हराम है तो शरीर नग्न (नंगा) और ज़ाहिर करने की इजाज़त इस्लाम में कब हो सकती है? यह तो बहुत हराम और नाजायेज़ होगा।

وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ النِّسَاءِ ۖ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (31)

है[1] और अपने गरेबान पर अपनी ओढ़नियों को पूरी तरह से फैलाये रहें[2] और अपनी ज़ीनत का इज़्हार किसी के सामने न करें सिवाय अपने शौहर के या अपने पिता के या अपने ससुर के या अपने बेटों के या अपने शौहर के बेटों के या अपने भाईयों के या भतीजों के या अपने भांजों के[3] या अपनी सखियों के[4] या ग़ुलामों के या नौकरों में ऐसे मर्दों के जिन को कामुकता (शहवत) न हो या ऐसे बच्चों के जो औरतों के पर्दे की बातों के बारे में न जानते हों[5] और इस तरह से ज़ोर-ज़ोर से पैर मार कर न चलें कि उन के छुपे सिंगार का पता लग जाये। और हे मुसलमानो! तुम सब के सब अल्लाह के दरबार में माफ़ी माँगो ताकि तुम कामयाबी पाओ।

---

[1] इस से मुराद वह ज़ीनत और जिस्म का अंग है जिसका छिपाना और पर्दा करना नामुमकिन हो, जैसे किसी को कोई चीज़ पकड़ाते या उस से लेते वक़्त हथेलियों का या देखते वक़्त आँखों का ज़ाहिर हो जाना। इस बारे में हाथ में जो अँगूठी पहने हुए या मेंहदी लगी हुई, आँखों में सुर्मा या काजल हो या कपड़ा और ज़ीनत को छिपाने के लिए जो नक़ाब या चादर ली जाती है वह भी एक ज़ीनत ही है, फिर भी यह ज़ीनतें ऐसी हैं जिनका इज़्हार ज़रूरत के वक़्त या ज़रूरत के सबब ठीक है।

[2] ताकि सिर, गर्दन और छाती का पर्दा हो जाये क्योंकि उन्हें भी नग्न करने की इजाज़त नहीं है।

[3] पिता में दादा, दादा के पिता, नाना और नाना के पिता और उस से ऊपर सभी शामिल हैं। इसी तरह ससुर में ससुर का पिता, दादा, दादा के पिता ऊपर तक। पुत्रों में पोता, परपोता, नाती, परनाती नीचे तक। पति के पुत्रों में पोतों और परपोतों नीचे तक, भाईयों में तीनों तरह के भाई (सगे पिता की तरफ़ से, माता की ओर से) और उनके पुत्र, पोते, परपोते, नाती, नीचे तक, भतीजों में उन के बेटे नीचे तक और भांजों मे तीनों तरह की बहनों की औलाद शामिल हैं।

[4] इन से मुराद मुसलमान औरतें हैं जिन को इस बात से रोक दिया गया है कि वह किसी औरत की ज़ीनत, ख़ूबसूरती, और सौन्दर्य और जिस्म की बनावट का अपने शौहर के सामने बयान करें। कुछ ने इस से वे ख़ास औरतें मुराद ली हैं जो ख़िदमत वग़ैरह के लिए हर वक़्त साथ रहती हैं जिन में दासियाँ भी शामिल हैं।

[5] उन से ऐसे लड़के अलग होंगे जो बालिग़ हों या बालिग़ होने के क़रीब हों, क्योंकि वे औरतों की शर्मगाह (गुप्तांग) को जानते हैं।

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿32﴾

३२. और तुम में से जो मर्द-औरत जवानी को पहुँच गये हों उन का विवाह कर दो और अपने नेक दास-दासियों का भी, अगर वे ग़रीब भी होंगे तो अल्लाह (तआला) अपनी रहमत से धनवान बना देगा,[1] अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म (ज्ञान) वाला है।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖ وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿33﴾

३३. और उन लोगों को पाक रहना चाहिए जो अपना विवाह करने का सामर्थ्य (क़ुदरत) नहीं रखते, यहाँ तक कि अल्लाह (तआला) अपने फ़ज़्ल से उन्हें धनवान बना दे, तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर आज़ादी का लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो, अगर तुम को उन में कोई भलाई दिखती हो[2] और अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उस में से उन्हें भी दो, तुम्हारी दासियाँ जो पाक रहना चाहती हैं, उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी के फ़ायदे के सबब बुरे काम पर मजबूर न करो।[3] और जो उन्हें मजबूर कर दे तो अल्लाह (तआला) उन के मजबूर किये जाने के बाद माफ़ कर देने वाला और रहम करने वाला है।[4]

---

[1] यानी सिर्फ़ ग़रीबी और धन की कमी विवाह में रूकावट नहीं होनी चाहिए, मुमकिन है कि विवाह के बाद अल्लाह उन की ग़रीबी को अपने फ़ज़्ल और रहमत से ख़ुशहाली में बदल दे।

[2] مُكَاتَب उस ग़ुलाम को कहा जाता है जो अपने मालिक से सुलह कर लेता है कि मैं इतनी राशि जमा करके भुगतान कर दूँगा तो आज़ादी का हक़दार हूँगा।

[3] अज्ञानकाल (जाहीलियत) में लोग सिर्फ़ दुनियावी माल जमा करने के लिए अपनी दासियों को व्याभिचार (ज़िना) पर मजबूर करते थे, चाहे न चाहे उसे यह अपमान का कलंक बरदाश्त करना पड़ता था, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसा करने से रोका है।

[4] यानी जिन दासियों से ज़बरदस्ती व्याभिचार (ज़िना) करवाया जायेगा तो ज़ालिम मालिक होगा, यानी मजबूर करने वाला, न कि दासी जो अबला है। हदीस में आता है, मेरे सम्प्रदाय (उम्मत) से ग़लती, भूल और ऐसे काम जो ज़बरदस्ती कराये गये हों, माफ़ हैं। (इब्ने माजा, किताबुत तलाक़, बाब तलाक़िल मुकरहे वन्नासी)

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿34﴾

३४. और हम ने तुम्हारी तरफ़ खुली और रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की कहावतें जो तुम लोगों से पहले गुज़र चुके हैं और परहेज़गारों के लिए नसीहत।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿35﴾

३५. अल्लाह नूर है आकाशों का और धरती का उस के नूर की मिसाल एक ताक़ की है जिस पर दीप (चिराग़) है और दीप शीशे की झाड़ में हो और शीशा चमकते हुए रोशन सितारे की तरह हो और वह दीप पाक पेड़ ज़ैतून के तेल से जलाया जाता हो, जो पेड़ न पूर्वी है न पश्चिमी और वह तेल ही क़रीब (मुमकिन) है कि रौशनी देने लगें, अगरचे उसको कभी आग न छुई हो, नूर पर नूर है, अल्लाह (तआला) अपने नूर की तरफ़ हिदायत करता है जिसे चाहे। लोगों को समझाने के लिए ये मिसाल अल्लाह (तआला) दे रहा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज़ की हालत अच्छी तरह जानता है।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿36﴾

३६. उन घरों में जिन के ऊँचा करने का और वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, वहाँ सुबह और शाम अल्लाह (तआला) की तस्बीह बयान करते हैं।[1]

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿37﴾

३७. ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात अदा करने से ग़ाफ़िल नहीं करती, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जायेंगी।

---

[1] 'तस्बीह' से मुराद नमाज़ है। آصال बहुवचन (जमा) है أصيل का मतलब है शाम। यानी ईमानवाले, जिन के दिल ईमान और हिदायत से रोशन होते हैं, सुबह और शाम मस्जिदों में अल्लाह की ख़ुशी के लिए नमाज़ पढ़ते और उस की इबादत (उपासना) करते हैं।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿38﴾

३८. इस मक़सद से कि अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल का अच्छा बदला दे और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा ही अता करे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ (जीविका) देता है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿39﴾

३९. और काफ़िरों के अमल उस चमकती रेत की तरह हैं जो खुले मैदान में हो जिसे प्यासा इंसान दूर से पानी समझता है, लेकिन जब उस के क़रीब पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता। हाँ, अल्लाह को अपने क़रीब पाता है जो उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है। और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब कर देने वाला है।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿40﴾

४०. या उन अंधेरों की तरह है जो बहुत गहरे समुद्र में हों जिसे ऊपर-नीचे की धाराओं ने ढक लिया हो, फिर ऊपर से बादल छाये हों, यानी अंधेरे हैं जो ऊपर-नीचे एक के ऊपर एक हों। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी मुमकिन है न देख सके, और (बात यह है कि) जिसे अल्लाह (तआला) ही नूर न दे, उस के पास कोई नूर नहीं होता।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ۗ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿41﴾

४१. क्या आप ने नहीं देखा कि आकाश और धरती की सभी मख़्लूक़ और पंख फैलाये उड़ने वाले सभी पक्षी अल्लाह की तस्बीह में लीन हैं, हर एक की नमाज़ और तस्बीह उसे मालूम है, और लोग जो कुछ करें उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।[1]

---

[1] यानी धरती वाले और आकाश वाले जिस तरह अल्लाह के हुक्मों का पालन और उसकी तारीफ़ करते हैं सब उस के इल्म में है, यह जैसाकि इंसानों और जिन्नों को चेतावनी है कि तुम्हें अल्लाह ने अक़्ल और शऊर की आज़ादी दी है तो तुम्हें दूसरे मख़्लूक़ के मुक़ाबिले ज़्यादा तस्बीह और तारीफ़ का बयान और उसकी पैरवी करना चाहिए, लेकिन हक़ीक़त इस के ख़िलाफ़ है। दूसरे मख़्लूक़ तो अल्लाह की तस्बीह में लगे हैं, लेकिन अक़्ल और समझ से सुशोभित सृष्टि (मुज़य्यन मख़्लूक़) इस में सुस्ती कर रही है, जिस पर बेशक वे अल्लाह की पकड़ के

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿42﴾

४२. धरती और आकाश का मुल्क अल्लाह ही का है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ۗ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿43﴾

४३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) बादलों को चलाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह पर तह कर देता है। फिर आप देखते हैं कि उन के बीच से वर्षा होती है, वही आकाश की तरफ़ से ओलों के पहाड़ से ओले बरसाता है, फिर जिन्हें चाहे उन्हें उन के पास बरसाये और जिन से चाहे उन से उन्हें हटा दे। बादलों से ही निकलने वाली बिजली की चमक ऐसी होती है कि जैसे अब आँखों की नज़र ले चली।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿44﴾

४४. अल्लाह तआला ही दिन-रात का उलट-फेर करता रहता है,[1] आँखों वालों के लिए बेशक इस में बड़ी-बड़ी शिक्षायें (नसीहतें) हैं।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿45﴾

४५. सभी के सभी चलने-फिरने वाले जानदार को अल्लाह (तआला) ने पानी से पैदा किया है, उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं,[2] कुछ दो पैर के बल चलते हैं[3] कुछ चार पैरों पर चलते हैं,[4] अल्लाह (तआला) जो चाहता है पैदा करता है।[5] बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

हक़दार होंगे।

[1] यानी कभी दिन बड़े, रातें छोटी और कभी इस के ख़िलाफ़ या कभी दिन की रोशनी को बादलों के अंधेरे से और रात के अंधेरों को चाँद की रोशनी से बदल देता है।

[2] जिस तरह साँप, मछली और दूसरे धरती पर चलने वाले कीड़े मकोड़े हैं।

[3] जैसे इंसान और पक्षी हैं।

[4] जैसे सभी चौपाये और दूसरे जानदार हैं।

[5] यह इशारा इस बात की तरफ़ है कि कुछ जानदार ऐसे भी हैं जो चार से भी ज़्यादा पैर रखते हैं, जैसे केकड़े, मकड़ी, खंखजूरा और बहुत से धरती के कीड़े।

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبَيِّنَاتٍ ۚ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (46)

४६. बेशक हम ने रौशन और खुली आयतें नाजिल की हैं। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखा देता है।[1]

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِنْهُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ (47)

४७. और कहते हैं कि हम अल्लाह (तआला) और रसूल पर ईमान लाये और फ़रमाँबर्दार हुए, फिर उन में से एक गुट उस के बाद भी मुँह मोड़ लेता है, ये ईमानवाले हैं ही नहीं।[2]

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُعْرِضُونَ (48)

४८. और जब ये इस बात की तरफ़ बुलाये जाते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल (उन के झगड़ों) का फ़ैसला कर दे, तो भी उन का एक गुट मुँह मोड़ने वाला बन जाता है।

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ (49)

४९. और अगर उन्हीं को हक़ पहुँचता हो तो फ़रमाँबर्दार होकर उस की तरफ़ चले आते हैं।

أَفِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَنْ يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ ۚ بَلْ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ (50)

५०. क्या उन के दिलों में रोग है? या ये शक और शुब्हा में पड़े हुए हैं? या उन्हें इस बात का डर है कि अल्लाह (तआला) और उस का रसूल उन के हक़ का ख़ात्मा न कर दें? बात यह है कि ये लोग ख़ुद ही बड़े ज़ालिम हैं।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (51)

५१. ईमानवालों का कहना तो यह है कि जब उन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह और उस का रसूल उन में फ़ैसला कर दे तो वह कहते हैं कि हम ने सुना और मान लिया, यही लोग कामयाब होने वाले हैं।

---

[1] آياتٌ مبينات से मुराद क़ुरआन करीम है, जिस में हर उस चीज़ का बयान है जिसका सम्बन्ध (तआल्लुक़) इंसान के धर्म (दीन) और अख़लाक़ से है, जिस पर उसकी भलाई और कामयाबी की बुनियाद है।

[2] यह मुनाफ़िक़ों (द्वयवादियों) का बयान है, जो मुँह से इस्लाम ज़ाहिर करते थे, लेकिन दिल में कुफ़्र और हसद रखते थे, यानी 'सच्चे ईमान' से महरूम (वंचित) थे, इसलिए मुँह से ईमान ज़ाहिर करने के बावजूद उन के ईमान का इंकार किया गया है।

५२. और जो भी अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म की पैरवी करें, अल्लाह का डर रखें और (उस के अज़ाब से) डरते रहें, वही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿52﴾

५३. और वे बहुत मज़बूती के साथ अल्लाह (तआला) की क़सम खा-खाकर कहते हैं कि आप का हुक्म होते ही निकल खड़े होंगे, कह दीजिए कि बस क़सम न खाओ, तुम्हारी इताअत (की हक़ीक़त) मालूम है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे जानता है।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿53﴾

५४. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) के हुक्म की पैरवी करो, रसूल की पैरवी करो, फिर भी अगर तुम ने मुँह मोड़ा तो रसूल का कर्तव्य (फ़र्ज़) तो केवल वही है, जो उस पर वाजिब कर दिया गया है, और तुम पर उस की ज़िम्मेदारी है जो तुम पर रखी गयी है, हिदायत तो तुम्हें उसी वक़्त मिलेगी जब रसूल की इताअत क़ुबूल करोगे, (सुनो) रसूल का कर्तव्य केवल साफ़-साफ़ पहुँचा देना है।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿54﴾

५५. तुम में से जो ईमान लाये हैं और नेकी का काम किया है अल्लाह (तआला) वादा कर चुका है कि उन्हें मुल्क (धरती) का अधिकारी बनायेगा, जैसाकि उन लोगों को अधिकारी बनाया था जो उन से पहले थे और बेशक उन के लिए उन के इस धर्म को मज़बूती के साथ क़ायम कर देगा जिसे उन के लिए वह पसन्द कर चुका है, और उन के इस डर और ख़ौफ़ को शान्ति व अमन में बदल देगा,[1] वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۠ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿55﴾

[1] कुछ ने इस अल्लाह के वादे को सहाबा केराम के साथ या ख़ुलफ़ाये राशदीन के साथ ख़ास तौर से सम्बन्धित किया है, लेकिन इसकी इस फ़ज़ीलत का कोई सुबूत नहीं है। क़ुरआन के लफ़्ज़ आम हैं और ईमान और नेकी के काम के साथ प्रतिबन्धित (मशरूत) हैं। लेकिन यह बात ज़रूर है कि ख़िलाफ़ते राशिदा के ज़माने में और नेकी के ज़माने में, यह अल्लाह का वादा ज़ाहिर हुआ, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ज़मीन पर ग़ालिब बनाया, अपने प्यारे दीन

किसी को शरीक नहीं करेंगे। उस के बाद भी जो लोग नाशुक्री करें और कुफ़्र करें तो वे बेशक नाफ़रमान हैं।

وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿56﴾

५६. और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और अल्लाह (तआला) के रसूल की पैरवी में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाये।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوٰهُمُ النَّارُ ۖ وَلَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿57﴾

५७. यह ख़्याल आप कभी न करना कि काफ़िर लोग धरती पर (इधर-उधर फैल कर) हमें पराजित कर देनें वाले हैं, उनका मूल ठिकाना तो नरक है, जो बेशक बहुत बुरा ठिकाना है।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَهُنَّ ۚ طَوّٰفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْآيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿58﴾

५८. हे ईमान वालों ! तुम से तुम्हारी मिल्कियत के दासों को और उन्हें भी जो तुम में से बुलूगत (वयस्क) उम्र को न पहुँचें हों (अपने आने के) तीन समयों में आज्ञा प्राप्त करना ज़रूरी है। फ़ज्र की नमाज़ से पहले और ज़ोहर (मध्यान्ह) के वक़्त जब तुम अपने कपड़े उतारे रखते हो और ईशा (रात) की नमाज़ के बाद[1] ये तीनों वक़्त तुम्हारे (अकेले) और पर्दे के हैं,[2] इन वक़्तों के सिवाय न तो तुम पर कोई गुनाह है न उन पर। तुम सब आपस में ज़्यादातर एक-दूसरे के पास आने-जाने वाले हो (ही) अल्लाह इस तरह

इस्लाम को तरक्की अता की और मुसलमानों के डर को शान्ति में बदल दिया।

[1] दासों से मुराद दास-दासियाँ दोनों हैं। ثلاث مرات का मतलब तीन वक़्त है, यह तीन वक़्त ऐसे हैं कि इंसान अपनी बीवी के साथ घर मे ख़ास तौर से रहता या ऐसे कपड़े में हो सकता है कि जिस में किसी दूसरे का देखना जायेज़ नहीं, इसलिए इन तीन वक़्तों में घर के सेवकों को इस बात की इजाज़त नहीं है कि वह बिना इजाज़त लिये घर में दाख़िल हों।

[2] عورات बहुवचन है عورة का, जिसका असली मायना कमी और दोष के हैं, फिर इसका इस्तेमाल ऐसी चीज़ पर किया जाने लगा जिसका ज़ाहिर करना तथा देखना प्रिय न हो। स्त्री को भी इसी लिए औरत कहा जाता है कि उसका इज़हार और नग्न होना और देखना धार्मिक रूप से नापसन्द है। यहाँ बयान तीन वक़्तों को औरात कहा गया है यानी ये तुम्हारे पर्दे और तंहाई के वक़्त हैं, जिन में तुम अपने ख़ास कपड़ों और हालत के ज़ाहिर करने को प्रिय नहीं समझते हो।

खोल-खोल कर अपने हुक्म तुम से बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (59)

५९. और तुम में से जो बच्चे बुलूगत (वयस्क) को पहुँच जायें तो जिस तरह उन से पहले के (बड़े) लोग इजाज़त माँगते हैं, उन्हें भी इजाज़त माँग कर आना चाहिए। अल्लाह (तआला) तुम से इसी तरह अपनी आयतों का बयान करता है। अल्लाह (तआला) ही जानने वाला और हिक्मत वाला है।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ اللَّاتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَن يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۖ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (60)

६०. और बड़ी बूढ़ी औरतें जिन्हें विवाह की उम्मीद (और मर्ज़ी) ही न रही हो वह अगर अपने कपड़े (पर्दे के लिए इस्तेमाल किये गये) उतार रखें तो उन पर कोई बुराई नहीं, अगर वह अपनी ज़ीनत दिखाने वाली न हों।[1] लेकिन उनसे भी बची रहें तो उन के लिए बहुत बेहतर है, और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَن تَأْكُلُوا مِن بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ

६१. अंधे पर, लंगड़े पर, रोगी पर और ख़ुद तुम पर कभी कोई हरज नहीं कि तुम अपने घरों से, खालो या अपने पिताओं के घरों से, या अपनी माताओं के घरों से, या अपने भाईयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचाओं के घरों से, या अपनी बुआओं के घरों से, या अपने मामाओं के घरों से, या अपनी मौसियों के घरों से, या उन घरों से जिन की चाभियों के मालिक तुम हो या अपने दोस्तों के

[1] इन से मुराद बूढ़ी औरतें और बाँझ औरतें हैं जिनका मासिक धर्म (हैज़) आना बन्द हो गया हो और विलादत के लायक़ न रह गयी हों। इस उम्र में आम तौर से औरत के अन्दर मर्द की तरफ़ ख़्वाहिश की प्राकृतिक (फ़ितरी) इच्छा ख़त्म हो चुकी होती है, न वह किसी मर्द से विवाह की इच्छा रखती है और न ही कोई मर्द इस भावना से उनकी तरफ़ आकर्षित (मायल) होता है, ऐसी औरतों को पर्दे में कमी के लिए इजाज़त दे दी गयी है।

اَخْوٰلِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗۤ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿61﴾

घरों से। तुम पर इस में भी कोई गुनाह नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ या अलग-अलग,[1] पर जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने घर वालों को सलाम कर लिया करो,[2] शुभकामना है जो मुबारक और पाक अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल है। इसी तरह अल्लाह (तआला) खोल-खोल कर अपने हुक्मों को बयान कर रहा है ताकि तुम समझ लो।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰۤى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿62﴾

६२. ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब ऐसे मसले में जिस में लोगों के जमा होने की जरूरत होती है नबी के साथ होते हैं, तो जब तक आप से इजाजत न ले लें कहीं नहीं जाते, जो लोग (ऐसे मौक़ा पर) आप से इजाजत ले लेते हैं, हक़ीक़त में वह यही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान ला चुके हैं, तो ऐसे लोग जब आप से अपने किसी काम के लिए इजाजत माँगें तो आप उन में से जिसे चाहें इजाजत दें और उन के लिए अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ करें, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम

---

[1] इस में एक परेशानी को हल किया गया है। कुछ लोग अकेले खाना खाना अच्छा नहीं समझते थे और किसी को साथ बिठाकर खाना खाना जरूरी समझते थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, जमा होकर खा लो या अलग-अलग, दोनों तरह से मान्य (जायेज) है गुनाह किसी में नहीं, लेकिन जमा होकर खाना अधिक शुभ (ज़्यादा बरकत) का कारण है, जैसाकि कुछ हदीसों से मालूम होता है। (इब्ने कसीर)

[2] इस में अपने घरों में दाख़िल होने के आदाब का बयान है, और वह यह है कि दाख़िल होते वक़्त घर वालों को सलाम (अभिवादन) करो, इंसान के लिए अपनी बीवी और औलाद को सलाम करने में आम तौर से तकलीफ़ महसूस होती है, लेकिन ईमान वालों के लिए जरूरी है कि वे अल्लाह के हुक्म के अनुसार ऐसा करें, अपनी बीवी और औलाद को सलामती की दुआ से क्यों महरूम रखा जाये।

करने वाला है।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿63﴾

६३. तुम (अल्लाह के) नबी के बुलावे को ऐसा आम बुलावा न समझो जैसा आपस में एक का दूसरे को होता है, तुम में से उन्हें अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो आँख बचा कर चुपके से निकल जाते हैं। (सुनो) जो लोग रसूल के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई बहुत सख़्त फ़ित्ना न आ पड़े[1] या उन्हें कोई दुख की मार न पड़े।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿64﴾

६४. बाख़बर हो जाओ कि आकाश और धरती पर जो कुछ है सब अल्लाह (तआला) का ही है, जिस रास्ते पर तुम लोग हो वह उसे अच्छी तरह जानता है और जिस दिन यह सब उसी की तरफ़ लौटाये जायेंगे, उस दिन उन को उन के किये हुए से वह अवगत (आगाह) करा देगा, और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

---

[1] इस मुसीबत से मुराद दिलों का वह टेढ़ापन है जो इंसान को ईमान से महरूम करती है। यह नबी ﷺ के हुक्मों की नाफ़रमानी और उन की मुख़ालफ़त का नतीजा है, और ईमान से महरूम होकर कुफ़्र पर ख़ात्मा, नरक की स्थाई यातना (दायमी सज़ा) की वजह बनती है, जैसाकि आयत के अगले वाक्य (जुम्ले) में फ़रमाया, अत: नबी ﷺ के अख़लाक़ और सुन्नत (चरित्र) को हर वक़्त सामने रखना चाहिए, इसलिए जो कथनी और करनी उसके ऐतबार से होगी वही अल्लाह के दरबार में क़ुबूल और बाक़ी सभी नाक़ुबूल होंगी। आप ﷺ का क़ौल है:

«مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا، فَهُوَ رَدٌّ»

"जिस ने ऐसा काम किया जो हमारे आदेश अनुरूप (मुताबिक़) नहीं है, वह बेकार है।" (अल-बुख़ारी, किताबुस्सुलह बाब इज़ा स्तलहू अला सुलहे जौरिन और मुस्लिम, किताबुल अक़ज़िया बाब नक़ज़िल अहकामिल बातिल: व रद्दि मुहदसातिल उमूर वस्सुनन)

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿11﴾

११. बात यह है कि लोग क़यामत को झूठ समझते हैं, और क़यामत को झुठलाने वालों के लिए हम ने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

إِذَا رَأَتْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿12﴾

१२. जब वह इन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका गुस्से से विफरना और चिंघाड़ना सुनेंगे।

وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿13﴾

१३. और जब यह नरक के किसी तंग जगह में बांध कर फेंक दिये जायेंगे, तो वहां अपने लिए मौत ही मौत पुकारेंगे।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿14﴾

१४. (उन से कहा जायेगा) आज एक ही मौत को न पुकारो बल्कि वहुत-सी मौतों को पुकारो।[1]

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿15﴾

१५. आप कह दीजिए क्या यह अच्छा है[2] या वह दायमी जन्नत जिसका वादा परहेज़गारों (सदाचारियों) को दिया गया है, जो उन का बदला है और उनके लौटने का मूल स्थान है।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُولًا ﴿16﴾

१६. वे जो चाहेंगे उन के लिए वहां मौजूद होगा हमेशा रहने वाले। यह तो आप के रब का वादा है जिस की मांग की जानी चाहिए।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿17﴾

१७. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें और अल्लाह के सिवाय जिन्हें ये पूजते रहे उन्हें जमा करके पूछेगा, क्या मेरे इन बंदों को तुम ने

---

[1] यानी जहन्नमी जब जहन्नम के अज़ाब से घबरा कर तमन्ना करेंगें कि उन्हें मौत आ जाये, वे तवाही के घाट उतर जायें, तो उन से कहा जायेगा कि अब एक मौत को नहीं कई मौतों को पुकारो। मतलब यह है कि अब तुम्हारी तक़दीर में कई तरह के अज़ाब हैं, यानी मौत ही मौत है, तुम कहां तक मौत की मांग करोगे !

[2] "यह" इशारा है नरक के बयान अज़ाबों की तरफ़, जिन में नरकवासी जकड़े हुए होंगे कि यह अच्छा है जो कुफ़्र और मूर्तिपूजा का बदला है, या वह स्वर्ग जिसका वादा अल्लाह से डरने वालों को उन के अल्लाह से डर और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करने पर दिया गया है, यह सवाल जहन्नम में किया जायेगा, लेकिन उसे यहां इसलिए बयान किया गया है कि शायद नरकवासियों के इस नतीजे से नसीहत हासिल कर के लोग अल्लाह का डर और उस के हुक्म की पैरवी का रास्ता अपना लें और इस बुरे अंजाम से बच जायें जिस का ज़िक्र यहां किया गया है।

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ

सूरतुल फ़ुरक़ान-२५

सूर: फ़ुरक़ान मक्का में नाज़िल हुई और इस में सतहत्तर आयतें और छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ①

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह तआला) जिस ने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान[1] नाज़िल किया ताकि वह सभी लोगों के लिए[2] सतर्क (आगाह) करने वाला बन जाये।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ②

२. उसी अल्लाह की मिल्कियत है आकाशों और धरती पर, और वह कोई औलाद नहीं रखता, न उस के मुल्क में उसका कोई साझीदार है, और हर चीज़ को उस ने पैदा कर के एक निर्धारित (मुनासिब) रूप दे दिया है।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ③

३. और उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय जिन्हें अपने देवता (इलाह) बना रखे हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे ख़ुद (किसी के ज़रिये) पैदा किये जाते हैं, यह ख़ुद अपने फ़ायदे-नुक़्सान का इख़्तियार नहीं रखते और न ज़िन्दगी-मौत का, और न दोबारा जी उठने के वे मालिक हैं।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ اِۨفْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ

४. और काफ़िरों ने कहा यह तो बस उसका ख़ुद बनाया झूठ है, जिस पर दूसरे लोगों ने भी उस की मदद की है[3] हक़ीक़त में यह काफ़िर

[1] फ़ुरक़ान का मतलब है सच और झूठ, तौहीद व शिर्क और इंसाफ़-नाइंसाफ़ी के बीच फ़र्क करने वाला, इस क़ुरआन ने खोलकर इन बातों को वाज़ेह कर दिया है, इसलिए इसे फ़ुरक़ान कहा गया है।

[2] इस से भी मालूम हुआ कि नबी ﷺ की नबूअत सारी दुनिया के लिए है और आप ﷺ सभी इंसान और जिन के लिए पथप्रदर्शक (रहनुमा) और पैग़म्बर बनाकर भेजे गये।

[3] मूर्तिपूजक कहते थे कि मोहम्मद (ﷺ) ने यह किताब गढ़ने में यहूदियों या उन के कुछ आज़ाद किये हुए ग़ुलाम (जैसे अबू फ़किहा यसार, अदास और जबर वग़ैरह) से मदद ली है, जैसाकि सूर: अन-नहल-१०३ में इस का ज़रूरी बयान गुज़र चुका है। यहाँ क़ुरआन ने इस इल्ज़ाम को ज़ालिम और झूठा बताया है, भला एक अनपढ़ इंसान दूसरों की मदद से ऐसी किताब पेश कर

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۚ (4)

बड़े ही ज़ालिम और निरे झूठ के लाने वाले हुए हैं।

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا (5)

५. और यह भी कहा कि यह तो पहलों की झूठी कहानियाँ हैं जो उस ने लिख रखी है, बस वही सुबह-शाम उस के सामने पढ़ी जाती हैं।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (6)

६. कह दीजिए कि इसे तो उस अल्लाह ने नाज़िल किया है जो आकाश और धरती की सभी छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۙ (7)

७. और उन्होंने कहा कि यह कैसा रसूल है कि भोजन करता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, उस के पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा जाता कि वह भी उस के साथ होकर डराने वाला बन जाता?

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (8)

८. या उस के पास कोई ख़ज़ाना ही डाल दिया जाता, या उस का कोई बाग़ ही होता जिस में से यह खाता, और उन ज़ालिमों ने कहा कि तुम तो ऐसे इंसान के पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۧ (9)

९. ज़रा सोचिए तो! ये लोग आप के बारे में कैसी-कैसी बातें करते हैं कि जिस से ख़ुद ही बहक रहे हैं, और किसी तरह से भी रास्ते पर नहीं आ सकते।

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا (10)

१०. अल्लाह (तआला) तो ऐसा बाबरकत है कि चाहे तो आप को बहुत से ऐसे बाग़ अता कर दे जो उनके कहे हुए बाग़ों से बहुत अच्छे हों, जिनके नीचे नदियाँ लहरें मार रही हों और आप को बहुत से पक्के महल भी अता कर दे।

सकता है जो सफ़ाई और भाषा शैली और फ़साहत में बेमिसाल हो। हक़ीक़त और मारफ़त के बयान में भी अकेला, इंसान की ज़िन्दगी के लिए आवश्यक हुक्म और नियम के तफ़सीली बयान में भी लाजवाब हो और भूत की ख़बरें और भविष्य (मुस्तक़बिल) में होने वाली घटनाओं (वाक़ेआत) का पता देने और बयान करने में भी उस की सच्चाई साबित हो।

भटकाया या यह ख़ुद भटक गये ।[1]

१८. वे जवाब देंगे तू पाक है, ख़ुद हमें यह मुनासिब नही था कि तेरे सिवाय दूसरों को अपना वली बनाते, हक़ीक़त यह है कि तूने इन्हें और इन के बुज़ुर्गों को ख़ुशहाली अता की, यहाँ तक कि यह नसीहतें भुला बैठे, यह लोग थे ही हलाकत के लायक़ ।

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا (18)

१९. तो उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी सारी बातों में झुठलाया, अब न तो तुम में अपनी सज़ा फेरने की ताक़त है न मदद करने की,[2] तुम में से जिस-जिस ने ज़ुल्म किया है[3] हम उसे सख़्त अज़ाब का मज़ा चखायेंगे ।

فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا (19)

२०. और हम ने आप से पहले जितने भी रसूल भेजे सब के सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे, और हम ने तुम में से हर एक को दूसरे के इम्तेहान का ज़रिया बना दिया[4] क्या तुम सब्र करोगे? और तेरा रब सब कुछ देखने वाला है ।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا (20)

---

[1] दुनिया में अल्लाह के सिवाय जिनकी इबादत की जाती रही है और की जाती रहेगी, उन में खनिज पदार्थ (पत्थर, लकड़ी और दूसरे धातुओं की मूर्तियां) भी हैं, जो बेजान हैं और अल्लाह के नेक बन्दे भी हैं जो जानदार हैं, जैसे हज़रत उज़ैर और हज़रत मसीह और दूसरे नेक लोग। इसी तरह फ़रिश्तों और जिन्नातों के पुजारी भी होंगे । अल्लाह तआला बेजान चीज़ों को भी अक़्ल और समझ और बोलने की ताक़त अता करेगा, और उन सभी देवताओं से पूछेगा कि बताओ मेरे बंदों को तुम ने अपनी इबादत का हुक्म दिया था या ये अपनी मर्ज़ी से तुम्हारी इबादत करके भटके थे?

[2] यह अल्लाह तआला का क़ौल है जो मूर्तिपूजकों को मुख़ातिब करके अल्लाह तआला कहेगा कि तुम जिन को अपना देवता समझते थे उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा कह दिया है, और तुम ने देख लिया कि उन्होंने तुम से अलग होने का एलान कर दिया है, यानी जिन को तुम अपना समझते थे वे मददगार साबित नहीं हुए, अब क्या तुम्हारे अन्दर यह ताक़त है कि तुम मेरे अज़ाब को अपने ऊपर से टाल सको और अपनी मदद कर सको?

[3] ज़ुल्म से मुराद वही शिर्क (मिश्रणवाद) है, जैसाकि पहले क़ौल से वाज़ेह है, और क़ुरआन में दूसरी जगह पर शिर्क (अल्लाह से अलावा की इबादत को) बहुत बड़ा ज़ुल्म कहा गया है ।

[4] यानी हम ने उन नबियों की और उन के ज़रिये उन पर ईमान लाने वालों का इम्तेहान लिया, ताकि खरे-खोटे में भेद स्पष्ट (वाज़ेह) हो जाये, जिन्होंने इम्तेहान में सब्र किया वे कामयाब और दूसरे नाकाम रहे । इसीलिए आगे फ़रमाया: "क्या तुम सब्र करोगे?"